IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

'मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों की नायिकाएँ' (चुनी हुई रचनाओं के संदर्भ में)

प्रो. डॉ. अलका हेमंत वागदरे
हिंदी विभाग,
विलिंग्डन महाविद्यालय, सांगली
alkanikamwagadare@gmail.com

Abstract: *साहित्य वह जो साथ चले। कहानी ने भी मनुष्य का साथ हजारों वर्षों से निभाया है। किसी जंगली जानवर से डरकर आदिम मनुष्य जब गुफा में लौटा तब उसने अपने भीतर घुमडते भावों को व्यक्त करने के प्रयास में दीवार पर उस जानवर का चित्र बनाया। यही संसार की पहली कहानी थी– मनुष्य और जानवर के मुठभेड की कहानी। पहली कहानी इस प्रकार शब्दों में नहीं रची गई बल्कि चित्र भाषा में उकेरी गई। तब से अनगिनत कहानियाँ रची जा चुकी हैं किंतु मालूम पडता है, इन तमाम कहानियों का मूल सरोकार लगभग ज्यों-का-त्यों बना हुआ है। यह सरोकार है परिवेश के साथ मनुष्य के संबंधों का निरूपण। कहानी यथार्थ की गर्भनाल के सहारे काल चेतना से जुडी रही है। आधुनिक जीवन दृष्टि और आचरण-प्रणाली का अनिवार्य खोकर कहानी जब कथात्मक गद्य में अवतरित हुई तो तत्कालिक प्रश्नों से जूझना उसकी विवशता बन गई।*

बीज शब्द – नारी चेतना, स्त्री-संघर्ष, शोषण, आत्मसम्मान, स्वतंत्रता, सशक्तिकरण

I. प्रस्तावना

साहित्य वह जो साथ चले। कहानी ने भी मनुष्य का साथ हजारों वर्षों से निभाया है। किसी जंगली जानवर से डरकर आदिम मनुष्य जब गुफा में लौटा तब उसने अपने भीतर घुमडते भावों को व्यक्त करने के प्रयास में दीवार पर उस जानवर का चित्र बनाया। यही संसार की पहली कहानी थी - मनुष्य और जानवर के मुठभेड की कहानी। पहली कहानी इस प्रकार शब्दों में नहीं रची गई बल्कि चित्र भाषा में उकेरी गई। तब से अनगिनत कहानियाँ रची जा चुकी हैं किंतु मालूम पडता है, इन तमाम कहानियों का मूल सरोकार लगभग ज्यों-का-त्यों बना हुआ है। यह सरोकार है परिवेश के साथ मनुष्य के संबंधों का निरूपण। कहानी यथार्थ की गर्भनाल के सहारे काल चेतना से जुडी रही है। आधुनिक जीवन दृष्टि और आचरण-प्रणाली का अनिवार्य खोकर कहानी जब कथात्मक गद्य में अवतरित हुई तो तत्कालिक प्रश्नों से जूझना उसकी विवशता बन गई।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की श्रेष्ठ कहानीकारों में मैत्रेयी पुष्पा का स्थान विशिष्ट रहा है। लीक से हटकर लिखना मैत्रेयी जी की खासियत है। सिर्कुरा जैसे छोटेसे गाँव में जन्मी मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों के माध्यम से पाठकों को एक नई दृष्टि प्रदान की है। मैत्रेयी जी की कहानियों में ग्राम जीवन से संबंधित कई समस्याओं का खुलकर चित्रण हुआ है। सच तो यह है कि उनकी कहानियों ने न गाँव का दामन छोडा न गाँव ने मैत्रेयी को छोडा। यही कारण है कि आलोचना जगत में मैत्रेयी जी को लेकर जो धारणा बनी है वह है गाँव की लेखिका के रूप में। समकालीन हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण कथाकार है मैत्रेयी पुष्पा। उनकी कहानियों में ग्रामीण जीवन, स्त्री-संघर्ष, सामाजिक असमानता, स्त्री के आत्मसम्मान चित्रण आया है। उनके लेखन में ब्रज और बुंदेल दोनों संस्कृतियों की झलक दिखाई देती है। उनकी कथाओं का केंद्र बिन्दु स्त्री-विमर्श है। उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक ऐसी घटनाएँ देखी है या स्वंय वह उन घटना की शिकार हुई है जो उनके कथा साहित्य में परिलक्षित होती है। पुष्पा जी ने अपनी कहानियों में विशेष रूप से निम्न

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

और मध्यम वर्ग की महिलाओं के जीवन को चित्रित किया है। ग्राम-जीवन में पिसती और जूझती नारी के दर्द और विडंबनाओं के चित्रण साथ-साथ भारतीय समाज व्यवस्था पर भी लेखिका सवालिया निशान लगाते हुए उसे कटघरे में खडा कर दिया है।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में चित्रित नारी भारतीय संस्कारों में बंधी होने के बावजूद अपना वजूद तलाशती है। मैत्रेयी पुष्पा के 'चिन्हार', 'ललमनियाँ', 'गोमा हँसती है' यह तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हुए है। इन कहानी संग्रहों में नारी के विविध रूपों को उठाया गया है। भारतीय संस्कृति पुरूष प्रधान संस्कृति होने के कारण नारी को हमेशा ही गौण स्थान दिया गया है। आजादी के पश्चात उसे संवैधानिक समानाधिकार तो मिला मगर सच्चे अर्थों में जितना अधिकार उसे मिलना जरूरी था उतना आज भी नहीं मिल पाया है। वैसे तो सन **1975** को 'अंतराष्ट्रीय महिला वर्ष' के रूप में घोषित कर दिया और सन **2001** को 'महिला सशक्तिकरण वर्ष' के रूप में घोषित कर दिया मगर आज भी भारतीय नारी सही रूप में आजाद नजर नहीं आती। हाँ यह निश्चित हुआ है कि उसकी संघर्ष, विद्रोह करने की प्रवृत्ति में सुधार हुआ है। निश्चित रूप से महिलाएँ अपने हक और कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो रही है।

मैत्रेयी पुष्पा जी के कहानियों में नायिका के विविध रूप चित्रित हुए है। इनकी कहानियों का केंद्र ज्यादातर ग्राम ही रहा है। ग्राम जीवन से संबंधित नारी को लेखिकाने अलग-अलग रूपों में चित्रित किया है जिसमें परंपरावादी, संघर्षशील, आधुनिक, मानवतावादी जैसे अलग-अलग रूप चित्रित हैं।

संघर्षशील नायिका -

मैत्रेयी जी की कहानियों में चित्रित नायिका सतत संघर्षशील रूप में हमारे सामने आती है। उनकी कहानियों में चित्रित नायिकाएँ देश के अस्सी प्रतिशत नारियों का प्रतिनिधित्व करती है। वे खुद लिखती हैं - 'मुझे गौरव उस औरत पर है जो अनपढ होकर भी बुद्धिमान, साधन विपन्नता झेलते हुए भी स्नेहमयी, गूँगी होकर भी कर्मशील, असभ्य कहलाकर भी सत्यनिष्ठ और सब तरफ से घिरी होकर भी मुक्त होने के लिए कटिबद्ध।'[1]

संघर्षशील नायिका के रूप में 'रिजक' की लल्लन 'अब फूल नहीं खिलते...' की झरना, 'मन नाहीं दस बीस' की चंदना 'प्रेम भाई ॲन्ड पार्टी' की तारा 'पापा ताला खुला है' की बिंदो महत्वपूर्ण है। यह सभी नानियकाएँ अपने कठोर संघर्ष के साथ हमारे सामने आती है। लल्लन का संघर्ष जीने के लिए है। वह कहती है - 'कबतक खीचेंगी पूरी गृहस्थी का बोझ ? क्या धजा बन गयी ? मुक्कदर की मार कहो से। भी नहीं। अपने रिजक से अपने पेशे से बेईमानी करी तो भोगेंगे नहीं ?'[2] लल्लन को सरकारी ऐलान के कारण ट्रेनिंग लेना पडा। ट्रेनिंग लेने कारण पति आसाराम उसे अनाज के बदले काम नहीं करने देता जिसके कारण कपूरे काका की पुतोहु और मास्टरजी की बहू की डिलेवरी करने लल्लन नहीं जाती। दोनों की मौत हो जाती है जिससे लल्लन अपने आप को दोषी मानती है अंत में जीने के लिए संघर्ष करते हुए परिवार की रोजी-रोटी के लिए वह अपने 'रिजक' में जुट जाती है।

'अब फूल नहीं खिलते....' की झरना का संघर्ष अपने प्रधानाचार्य से है। 'मन नाही दस बीस' की चंदना का संघर्ष अपने पति और देवर से है तो 'प्रेम भाई अन्ड पार्टी' की तारा का संघर्ष देवर सौदानसिंह से है। लडकेवालों के कहनेपर तारा को सौदानसिंह को बारात में शामिल करने की बहुत बडी किमत चुकानी पडती है क्योंकि सौदानसिंह के पी. ए. ने स्पष्ट समझाया कि 'साहब के पास फालतू समय नहीं है। एक-एक पल बेशकीमती है उनका। और अब वे मंत्री पद पर तो हैं नहीं कि सरकारी महकमों दखल दे। फिर आमदनी का हीला ? माना की तुम क्षेत्र के आदमी हो, पर भइया, घोडा घास

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

से यारी करे तो खाए क्या ?'[3] हारकर तारा ने अपने लडकी के लिए बनवाई चीजें बेचकर सौदानसिंह को बारात में तो शामिल कर लिया मगर तारा जमीन पर लुढक पडी बेसुध ! बेहोश।

'ताला खुला है पापा' की बिंदो का संघर्ष अपने पिता से है। डायरी शैली में लिखी गई इस कहानी की नायिका बिंदो अरविंद से प्यार करती है। ब्राह्मण परिवार की लडकी नाई परिवार के अरविंद से प्यार करे यह बात पापा जगदीश को कतई पसंद नहीं है। बिंदो को समझाने पर भी जगदीश बिंदो की आँखों में प्यार की चमक देखते है तो वह बिंदो को कोठी में बंद करके जाते है। बिंदो की माँ झाँसी के अस्पताल में ॲडमिट थी। ऐसी अवस्था में डर के मारे जगदीश चौबे का बिंदो को कोठी में बंद करके जाना स्त्री अस्मिता को ठेंस पहुँचाना ही है। हम कितनी ही जातिविहीन समाज की बात करते हो मगर आज भी यह सत्य है कि हम जाति को न भूलते है न किसीको भूलने देते है। एक दिन जब जगदीश ताला लगाना भूल जाते हैं तब घर आते ही वे डर जाते हैं कि उन्हें न जाने अंदर जाकर क्या देखना पडे।

बिंदो को लेखिकाने सहनशील मगर संघर्ष करनेवाली युवती के रूप मे चित्रित किया है। जब जगदीश ताला लगाना भूल जाते हैं तब बिंदो का महीन स्वर उनका पीछा करता हैं - 'ताला खुला है पापा'[4] बिंदो का का संघर्ष पिता के साथ-साथ उस समाज से भी है जो आज भी जातिव्यवस्था में विश्वास रखता है।

विद्रोही नायिका -

अन्याय के खिलाफ विद्रोह करना मनुष्य की प्रवृत्ति है। मनुष्य अपना विद्रोह कभी मूक रूप से, कभी खुलकर तो कभी अपनी कृति के माध्यम से करता है। संघर्ष की अगली कडी है विद्रोह। केतकी, चंदा, झरना, बसुमति, चंदना का विद्रोह देखने योग्य है।

'केतकी' कहानी की नायिका 'केतकी' उसपर होनेवाले अन्याय का खुलकर विरोध करती है। केतकी जो पंडित श्रीगोपल की पुत्रवधू बनकर आयी थी उसपर श्रीगोपाल के हरउम्र मित्र गंधर्वसिंह बलात्कार करते हैं। गंधर्वसिंह केतकी के पिता समान है। पूरे गाँव में गंधर्वसिंह के न्याय की दुहाई दी जाती है परंतु सारा गाँव जानता है कि वे पैसे के बलपर तानाशाही चला रहे है। केतकी उसपर हुए अत्याचार का खुलकर मुकाबला करने की ठान लेती है। केतकी का मानना है - 'सबकुछ लुट जाने के पश्च्यात्, यदि मैं चुप रही तो अत्याचार दुहराया जाता रहेगा। गाँव की न जाने कितनी युवतियाँ अपने मुख पर स्वयं कांलिख पुतवाना स्वीकार करती रहेंगी..... डर से, इन दुराचारियों के भय से...। मैं पंडित श्रीगोपाल के उज्वल कुल की पुत्रवधु इस कुल के कलंकित होने के भय से आज डर गई तो न जाने कितनी केतकी याँ ही लुटती रहेंगी, बदनाम होती रहेंगी और कितने नवयुवक उस कलंक को अपने सिर लेकर आजन्म कुंठित होते रहेंगे।'[5] केतकी अपने बालसखा चंदन की सहायता से गंधर्वसिंह को जेल पहुँचाती है। यहाँ केतकी का विद्रोह देखने लायक है।

'मन नाहीं दस बीस' की चंदना बचपन से लाड-प्यार में पली-बडी। चंदना सहपाठी स्वराज से शादी करना चाहती है मगर चंदना के पिता को यह मंजूर नहीं है। वे चंदना की शादी तो कर देते है मगर चंदना का पति नपुंसक है। चंदना यह बात जान चुकी है। सास को पोता चाहिए और देवर, को ऐश-अय्याशी। दोनों की मिली-भगत से यह खेल खेला जाता रहा। चंदना के सहने की सीमा पार चुकी थी। उचित-अनुचित का भेद वह भूल गई और मन में क्रोध का अशमित अग्नि-ज्वार फूट पडा। विद्रोही चंदनों ने जो धतूरा अपनी मृत्यु के लिए मँगाया था उसे देवर के खाने में मिला दिया। भूखे पति ने देवर की थाली में ही खाना शुरू कर दिया और दोनों ही पागल हो गए। अपने पर होनेवाले अन्याय को चंदना ने अपने स्तर पर समाप्त करने का प्रयास किया।

'अब फूल नहीं खिलते.....' की झरना भी अपना विद्रोह खुलकर प्रकट करती है क्योंकि वह जानती है अगर वह चुप रही तो - 'आनेवाले कल के दिन जिनती झरना, विद्या ग्रहण करने आए, उनके साथ यह सलूक होता रहेगा, यही कुचक्र

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

आगे बढेगा।'[6] झरना अपने अन्याय को दबाना नहीं चाहती। उस पर हुए अन्याय का खुलकर विरोध करते हुए वह न्याय की माँग करती है - 'प्रिंसिपल को बाहर करो.... राक्षस को निकाल दो... छात्र को न्याय दो'[7]

'भारतीय स्त्रीयों को कभी मनुष्य नहीं समझा गया पुरूष से बराबरी की बात तो दूर की है। सदियों से चली आ रही पितृसत्ताक कुल-मर्यादा को मैत्रेयी पुष्पा अपने स्त्री पात्रों के माध्यम से तोडती चलती है। उनकी कथाओं में स्त्री-संघर्ष और विद्रोह के विविध आयाम दिखाई देते है। उनकी कहानियों में स्त्री का जीवन खोकला नहीं बल्कि यथार्थ के रूप में प्रस्तुत हुआ है।'[8] 'बिछुडे हुए' की चंदा का विद्रोह मुक विद्रोह है चंदा के पति सुग्रीव खेती, फसल, कर्ज, सूद, पत्नी, बच्ची, तेल, लकडी की चिंता से त्रस्त हैं। संसार से मुक्ति चाहता है इसलिए सुग्रीव स्वामी शतानंद बन जाता है। शतानंद संसार के भँवर में चंदा और दुधमुँही बच्ची मगना को गंगाघाट पर धोखे से छोडकर भाग जाता है। बीस साल बाद संयोगवश जब अपने ही गाँव पहुँचता है तो उसका सहपाठी शंकर उसे पहचान लेता है। चंदा भी सुग्रीव को पहचान गई है मगर वह सुग्रीव को पहचानने से इन्कार करते हुए स्पष्ट कहती है - 'मगना बेटी, तू यहाँ.... घर में कितना काम फैला है। इस गाँव के आदमी तो बाबरे ठहरे, जो भी साधू आता है उसे ही तेरा पिता...।[9] और चंदा चली गई उसने पीछे मुडकर नहीं देखा। यहाँ चंदा का विद्रोह देखने लायक है।'

'पगला गई है भागवती' की भागवती बाल विधवा है। बहन की लडकी अनुसुइया को अपनी बेटी मानकर उसे पाल-पोसकर भागवती ने उसे बडा किया है। अनुसुइया ने मास्टरजी से प्यार किया और भगवान को साक्षी मानकर उसने मास्टरजी से शादी भी की और अब वह गर्भवती थी। जब माधो ठाकुर को जब यह पता चला तब उन्होंने जहर देकर उसे मौत के घाट उतार दिया। मगर यही गलती जब पुत्र नरेश ने की तो पूरे गाँव को दावत दी गई। 'मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों की नारियाँ सामाजिक रूढियों और बंधनों से टकराती हैं। उनकी कहानियाँ उस समाज पर सवाल उठाती है जो बेटा और बेटी में भेद करता है। समान अपराध करनेवाले बेटी को सजा दी जाती है और बेटे को सम्मान दिया जाता है।'[10] नायिका भागवती बेटे और बेटी में जो फर्क किया गया उसे नहीं सह पाती वह स्पष्टता से कहती हैं - 'ओ अधरमी ! अन्यायी ! ठाकुर माधो ! आज बेटा-बहू के स्वागत में मेरे जा रहे हो तुम खुसी में असपेर भर के गाँव जिंवा रहे। आज आँखे मूँद लईं ? बेटा की गलती नहीं दिखाई देती तुम्हें ? बहू की आरती उतारे जा रहे हो जो हिंदू तक नईयां और चार महिना गरभ ! माधो फिर आज दै दै बेटा को जहर जैसी मेरी अनुसुइया को...!!!'[11] भागो इतना कहकर नहीं रूकती वह अपना विद्रोह जाहिर करते हुए माधो ठाकुर पर पत्थरों की बौछार करती है जिसमें माधो ठाकुर अचेत होकर लुढक जाता है। 'पगला गई है भागवती' में भागवती की मानसिक स्थिति, समाज का दबाव और पीडा का मार्मिक चित्रण है। इस कहानी में समाज की कठोर परंपराओं पर सवाल उठाए गए है।

हिंदी साहित्य में महिला लेखन के संदर्भ में मैत्रेयी पुष्पा का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने ग्रामीण और कस्बाई जीवन की सजीव तस्वीर प्रस्तुत करते हुए नारी चेतना को सशक्त स्वर दिया है। उनकी कहानियों में न केवल महिलाओं की समस्याएँ बल्कि उनके संघर्ष, आकांक्षाएँ और जीवन की जटिलताएँ प्रमुख स्थान पाती है। वह अपनी लडाई खुद लडती है और अपने अधिकारों को स्वयं प्राप्त करती है। वह नारी को शोषण से मुक्त करने और उसके स्वतंत्र अस्मिता को स्थापित करने का प्रयास करती है। 'फैसला' कहानी की बसुमति का विद्रोह भी मूक विद्रोह है। बसुमति का पति रणवीर कानून के नियम के अनुसार एक साथ दो-दो पद नहीं रक सकता। इसलिए वह गाँव के प्रधान के रूप में पत्नी बसुमति को चुनाव में खडा करता है। बसुमति पंचायत की प्रधान तो बनती है मगर कोई भी निर्णय लेने का अधिकार रणवीर उसे नहीं देता। दीन-दुःखीयों पर होनेवाले अन्याय पर बसुमति कोई निर्णय नहीं ले सकती और अगर कोई निर्णय ले भी लिया तो रणवीर उसे मानने नहीं देता। सारे निर्णय बसुमति को छोडकर लिए जाते हैं और उन निर्णयों पर जबरन उसके हस्ताक्षर लिए जाते हैं, उसे दस्तखत करने पर मजबूर किया जाता है। बसुमति इस दबाव को सह नहीं पाती।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

जब रणबीर एम. एल. ए. पद के चुनाव में खडा होता है तब अपना किमती वोट लुहार के बेटे को दे आती है। बसुमति के इस फैसले से रणवीर चुनाव हार जाता है। यहाँ बसुमति का मूक 'फैसला' ही उसका विद्रोह प्रकट करता है। मैत्रेयी पुष्पा ने राजनीति को स्त्री का क्षेत्र माना है। जबतक स्त्री अपने हकों के प्रति सचेत होकर राजनीति से खुद जुड नहीं जाती तबतक अन्याय दूर नहीं होंगे। स्त्री को अपना अधिकार खुद लडकर, संघर्ष कर कभी विद्रोह कर पाना होगा क्योंकि कोई बाहरवाला आके उन्हें हक प्रदान नहीं करेगा।

आधुनिक नायिका -

वैसे तो मैत्रेयी जी की कहानियों की नायिकाएँ ग्राम जीवन से अधिक संबंधित हैं फिर भी एखाद स्थान पर उन्होंने आधुनिक नायिका का चित्रण किया है। 'बोझ' कहानी की अक्षय की मम्मी नौकरी करती है। दिनभर काम करने के कारण वह अक्षय की ओर उतना ध्यान नहीं दे पाती जितना आवश्यक है। 'यह लडका भी एक ही है। पापा से डाँट पडवाएगा। इसके कारण इतनी जल्दी उठती हूँ। सुबह से कितनी भागमभाग .... ब्रेकफास्ट, दोपहर का टीफिन। दफ्तर की तैयारी। कपडे लगाना-धरना, सब कुछ निबट जाता है, मगर यह है कि किसी-न-किसी तरह देर कर देगा।'[12] नौकरी के कारण तीन साल का अक्षय क्रश में भेजा जाता है। अक्षय रोज-रोज क्रश से शिकायतें लाता है। अक्षय की बुआ होस्टल में रहती है जब एक दिन वह घर पहुँचती है तो देखती है कि अक्षय को बेरहमी से पिटा जा रहा है। बुआ कहती है 'यह तुम्हारा बेटा है। तुममें से एक जना छोड दे नौकरी। ले लो छुट्टी। पाल नहीं सकते तो पैदा क्यों किया पंछी पखेरू तक अपने बच्चों को उडना सीखाने से पहले दूसरे के भरोसे नहीं छोडते तुम तो मनुष्य जात पढे-लिखे ! सभ्य .... सुसंस्कृत हो...।'[13] यहाँ अक्षय की मम्मी और बुआ सुनिता की छटपटाहट देखने लायक है।

मानवतावादी नायिका -

मानवता मनुष्य की भाव चेतना का तत्व है। मनुष्य समाजशील प्राणी है। समाज में रहते उसे एक-दूसरे के सहारे की जरूरत पडती है। मानवता के तौर पर हम एक-दूसरे की जाने-अनजाने में भी मदद करते रहते हैं। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में भी एक-दो स्थानों पर इसका चित्रण आया है। 'सिस्टर' कहानी की सिस्टर डोरोथी डिसूजा मानवतावादी नायिका के रूप में चित्रित हुई है। गाँव के हर व्यक्ति इलाज करती है। पोलियो वैक्सीन, डी. पी. टी. के टीके बच्चों को दिलाती मगर सब काम मानवतावादी दृष्टि से करती है। सिस्टर डोरोथी का मानना है - 'मदद के बदले पइसा लेगा हम। ईशु हमारे को मुआफ नहीं करेगा।'[14] इसी भावना से वह सुरेशचंद का भी इलाज करती है। सिस्टर बदले में केवल प्यार चाहती है मगर अंत में समझ जाती है कि वह केवल एक सिस्टर है क्योंकि सुरेशचंद के बेटे की शादी में वह बुआ के रूप में शामिल होना चाहती है मगर लोग काम निकलने के बाद रिश्तेदारी नहीं निभाते जिसका अनुभव सिस्टर को आता है। 'बहलिए' की नायिका गिरिजा भी मानवतावादी नायिका के रूप में चित्रित हुई है।

परंपरा के बोझ को ढोने के लिए अभिशिप्त नायिका -

मैत्रेयी पुष्पा को गाँव का बेहद आकर्षण है। आज भी अपने कठिनतम क्षणों में उन्हें गाँव की याद आती है। गाँव की सोंधी महक उन्हें लुभाती है। गाँव के रीति-रिवाज परंपराओं का उन्हें बेहद मोह है। 'अपना अपना आकाश', 'बेटी', 'गोमा हँसती है', 'ललमनियाँ' जैसी कहानियों में उन्होंने परंपरा के बोझ को ढोने के लिए अभिशिप्त नायिकाओं का चित्रण किया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

'अपना अपना आकाश' की अम्मा-(कैलाशोदेवी) को भारतीय परंपरावादी नायिका के रूप में लेखिका ने चित्रित किया है। अम्मा का भरा-पूरा परिवार है। तीन बेटे, बहुएँ, पोता-पोती मगर इन सबके बावजूद अम्मा को यह अधिकार नहीं है कि वह किसी एक बेटे के घर में रहे। हर चार महिने बाद इसका बिस्तर एक घर से उठकर दूसरे घर में पटका जाता है। बेटों ने मिलकर उनसे जायदाद के कागजों पर दस्तखत करवा लिए है तब से वह कहीं की नहीं रही। चार मास के बाद एक दिन भी अधिक वे एक घर में नहीं रह सकती क्योंकि इनमें से कोई भी घर उनका गाँववाला घर नहीं है। भरा-पूरा परिवार होने के बावजूद अम्मा का कोई नहीं है। जब बेटों ने उन्हें बंगलोर के आश्रम में भेजने की योजना बनाई तो वह सह न सकी 'इतनी पराई कि माँ के लिए वनवास की तैयारी कर दी उनके अपने ही बेटों ने ....।'[15] अम्मा यह सदमा बरदाश्त न कर सकी और बिना अपने बेटों को बताएँ गाँव की ओर निकल पडी। यहाँ हिंदी फिल्म 'बागबान' की याद आये बिना नहीं रहती।

नारी की विवशता, मतलब परस्त रिश्तेदारी, शुष्क यांत्रिक संबंधों के साथ-साथ सास-बहू के संबंधों पर भी लेखिका ने अम्मा के माध्यम से प्रकाश डाला है।

'स्त्री-विमर्श की गंभीर लेखिका मैत्रेयी पुष्पा आसपास घटित घटनाओं के विद्रुप चित्रण में विश्वास नहीं करती। इन्होंने भारतीय नारी जीवन की चतुर्दिक समस्याओं एवं विसंगतियों को बिल्कुल देशज परिवेश में देखा, परखा है फलस्वरूप इनके व्दारा चित्रित स्त्री-चरित्रों की विश्वसनियता एवं जीवंतता इन्हें विशिष्ट बनाती है। उनकी नारी चेतना मूक विद्रोह से चलकर मूकर सामूहिक संघर्ष की दिशा में अग्रसर हुई है।'[16] आज भी भारत में बेटा-बेटी फर्क किया जाता है। 'बेटी' कहानी की मुन्नी भी ऐसी ही परंपरा में पलनेवाली नायिका के रूप में चित्रित हुई है। मुन्नी पढना चाहिए है। मगर पुराने संस्कारोंवाली मुन्नी की माँ स्पष्टता से कहती है - 'हमने कह दिया न नहीं पढा सकते तुझे, तू लडकों की बराबरी करती है ! बेटे तो बुढापे की लाठी है हमारी, हमें सहारा देंगे ! तू पराए घर का दलिद्दर ! तेरी कमाई नहीं खानी हमें ..... कान खोलकर सुन ले।'[17]

आज भी भारतीय संस्कृति में बेटों को बुढापे का आधार गया है। इसी परंपरा की वजह से मुन्नी जैसे कितनी ही लडकियों का नुकसान होता है। मगर इसके बावजूद प्रताडित मुन्नी नारी सहनशीलता और ममत्व के कारण अपने बूढे माँ-बाप की सेवा के लिए अपनी बेटी को माँ-बाप के पास छोड जाती है।

इस संदर्भ में **22** जनवरी **2015** को भारत सरकार व्दारा 'बेटी बचाओं बेटी पढाओ' योजना की शुरूआत की गई। जिसके कारण मुन्नी जैसे स्थिति किसी भी बेटी की ना हो।

'ललमनियाँ' की मौहरो भी परंपरा की चक्र में फसी नायिका के रूप में चित्रित हुई है। 'ललमनियाँ' एक नृत्य प्रकार है जो लडकीवाले बारात आते वक्त गाते हैं। मौहरो की अम्मा भी ललमनियाँ गाती थी। अपनी संस्कृति और परंपरा को माननेवाली अम्मा गाँव के बहू-बेटियों को ललमनियाँ सीखाना चाहती थी मगर जब कोई उनकी निगाह में खरी नहीं उतरी तो अम्मा ने सात साल की मौहरो को ही दरपन में घाघरी पहनकर नाचना सीखाया। मौहरो को ललमनियाँ करते जब जोगेस ने देखा तभी उसने फैसला कर लिया कि वह मैहरो से शादी करेगा और करता भी है मगर परंपरावादी जोगेस के माँ-बाप मौहरो को घर में पाँव तक रखने नहीं देते।

मैत्रेयी पुष्पा का ग्राम्य-बोध रोमांटिक नहीं बल्कि कटु यथार्थपरक है। जकडन और परिवर्तन के लिए संघर्षरत औरतों की कहानी पुष्पाजी प्रस्तुत करती है। 'ललमनियाँ' में नारी अस्मिता की अवहेलना दिखाते हुए अंत में लेखिका ने मौहरो को जोगेस के शादी में ललमनियाँ करते हुए दिखाया है। वैसे तो परंपरा को तोडकर जोगेस ने मौहरो से शादी करने का साहस किया था मगर परंपरावादी माँ-बाप और समाज ने उसका साथ नहीं दिया।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

'गोमा हँसती है' की गोमा भी इसी प्रकार के नायिका के रूप में हमारे सामने आती है। गोमा आदर्श परंपरावादी नायिका है। 'सवेरे मुँह अंधियारे ही चौका-चूल्हा लीप डालती है। पानी भर लाती। कागा बोले तब तक तो कंडा सुलगाकर तवा चढ चुकी होती। असली घी के 'परमटे' सेंक देती है। फिर दही बिलौना, भैस-बर्दो के सानी खडेरा'[18] गोमा का आदर्श दांपत्य-जीवन कहानी में चित्रित है।

II. निष्कर्ष

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की महिला कथाकार के रूप में मैत्रेयी पुष्पा का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। उनके कहानियों में चित्रित नायिका नारीवाद के नारी के रूप में नहीं बल्कि जीवन के स्वाभाविक प्रवाह के रूप में चित्रित हुई है। उनकी कहानियों में चित्रित नायिका भारत की सामान्य महिला होती है जो भारतीय संस्कारों में बंधी होने के बावजूद अपना वजूद तलाशती है। 'फैसला' की बसुमति, 'अब फूल नहीं खिलते....' की झरना 'केतकी' कहानी की केतकी, 'मन नाहीं दस बीस' की चंदना, 'बिछडे हुए' की चंदा, 'ललमनियाँ' की मौहरो सबका अपना-अपना अलग अस्तित्व है, अपनी अलग पहचान है। इनके कहानियों की नायिकाएँ केवल लडने के लिए अपने विरोधियों से नहीं लडती। इसके पीछे एक मक्सद है। यह मक्सद होता है - स्त्री व्दारा खुद अपनी अस्मिता की तलाश और समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना। इनकी नायिकाएँ समाज की उन मान्यताओं को नहीं ढोती जो मनुष्य को अस्तित्वहीन कर दे।

नारी सशक्तिकरण की पहली शर्त है यह कि क स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में नारी की प्रतिष्ठा को उजागर करे। यह कार्य शिक्षा, संचार माध्यमों, राजनीतिक दलों, सरकारी–गैरसरकारी संगठनों के सामूहिक प्रयासों से संभव है। नारी मुक्ति, नारी सशक्तिकरण और नारी विकास ये तीनों साथ-साथ अग्रसर होने चाहिए। जिस दिन स्त्रियों को वस्तु के स्थान पर 'व्यक्ति' के रूप में स्वीकार किया जाएगा उसी दिन अनेकानेक समस्याओं का समाधान स्वतः हो जाएगा। जिसके लिए 'मनुष्यता' ही सबसे बडा विचार है, जिसे हम कोई भी नाम दे सकते हैं। ठेठ भारतीय परिवेश में भारतीय नारी की स्थिति का मर्मस्पर्शी चित्रण मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में चित्रित हुआ है।

संदर्भ सूची

1. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. **143**
2. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. **66**
3. मैत्रेयी पुष्पा - गोमा हँसती हैं - पृ. **67**
4. मैत्रेयी पुष्पा - वहीं पृ. **79**
5. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. **132**
6. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ पृ. **63**
7. मैत्रेयी पुष्पा - वहीं पृ. **64**
8. अपनी माटी Peer Reviewed Refered Journal त्रैमासिक शुरूआत - **2013** चितौडगढ (राजस्थान)
9. मैत्रेयी पुष्पा गोमा हँसती है - पृ. **56**
10. International Journal of Hindi Research www.hindijournal.com ISSN – 2455-2232 Valume II Issue 2 15/05/2025
11. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. **104**
12. वहीं पृ. **46**

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

13. वहीं पृ. **43**
14. वहीं पृ. **21**
15. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. **19**
16. रामचंद्र तिवारी - हिंदी का गद्य साहित्य पृ. **357**
17. मैत्रेयी पुष्पा – चिन्हार पृ. 21
18. मैत्रेयी पुष्पा - गोमा हँसती हैं - पृ. **46**